विशद
मल्लिनाथ विधान
माण्डला

मध्य में - हीं
प्रथम वलय में - 5
द्वितीय वलय में - 10
तृतीय वलय में - 20
चतुर्थ वलय में - 40
पंचम वलय में - 46

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद श्री मल्लिनाथ विधान**

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति**
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – **2015**

प्रतियाँ – **1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी,**
क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) , आस्था दीदी, सपना दीदी**

संयोजन – **आरती दीदी ● मो. 9829127533**

प्राप्ति स्थल – 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन
जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक
गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री स्वरूपचन्द जी आशीष कुमार जी शाह

कटेवा नगर, न्यू सांगानेर रोड़, जयपुर-302019 मो. 9309046826

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(स्थापना)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) ।।

श्री मल्लिनाथ स्तवन

(चौबोला छन्द)

भव्य जीव रूपी कमलों को, मल्लिनाथ जिन सूर्य समान।
प्राणी मात्र के हितकारी का, करते भाव सहित गुणगान॥
देवों द्वारा पूजनीय हैं, श्री जिनवर देवाधिदेव।
चर अरु अचर द्रव्य दर्शायक, तव चरणों में नमन सदैव॥1॥

दोष नष्ट हो गये हैं जिनके, देवों से अर्चित जिनदेव।
गुण के सागर श्री जिनेन्द्र के, चरणों वन्दन करूँ सदैव॥
मोक्ष मार्ग के उपदेशक शुभ, जो हैं देवों के भी देव।
श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, विशद नमन् मैं करूँ सदैव॥2॥

हे देवाधिदेव सिद्ध श्री!, हे सर्वज्ञ! त्रिलोकी नाथ।
हे परमेश्वर! वीतराग श्री, जिन तीर्थंकर के पद माथ॥
हे जिन श्रेष्ठ महानुभाव कई, वर्धमान! स्वामिन् शुभ नाम।
तव चरणों की शरण प्राप्त हो, करते बारंबार प्रणाम॥3॥

जिनने जीते हर्ष द्वेष मद, अरु जीता है ईर्ष्याभाव।
मोह परीषह को भी जीता, अन्तर में जागा समभाव॥
जन्म मरण आदि रोगों को, जीत किया है भव का अन्त।
ऐसे श्री जिनदेव हमारे, सदा-सदा होवें जयवन्त॥4॥

तीन लोकवर्ति जीवों के, हितकारक हैं आप महान्।
धर्म चक्ररूपी सूरज हैं, लाल चरण हैं आभावान॥
इन्द्र मुकुट में चूड़ामणि की, किरणों से अति शोभावान।
जयवन्तों श्री मल्लिनाथ पद, करते हैं जग का कल्याण॥5॥

दोहा- तीर्थंकर जिन लोक में, करते जग कल्याण।
भव्य जीव गुणगान कर, पाते पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री मल्लिनाथ जिनपूजन

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश ॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान ।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान ॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ !
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भु छंद)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं ।
हे नाथ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं ।
भवाताप से मुक्ती पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोकों में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए ।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतु यह, अक्षय अक्षत हम लाए ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गँवाते आए हैं ।
हो काम वासना नाश प्रभो!, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं ।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ सताए हैं ।
अब नाश हेतु इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं ।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल है कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं ।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं ॥
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है ।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **जल से यहाँ प्रधान, शांती धारा दे रहे ।**
मल्लिनाथ भगवान, हमको भी निज सम करो ॥

शान्तये शांतिधारा

सोरठा– **पुष्पांजलि के साथ, अर्चा करते भाव से ।**
चरण झुकाते माथ, शिवपद पाने के लिए ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान ।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण ॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ ।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भु छंद)

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान ।
प्रभावती माँ कुम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान ॥
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार ।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार॥

तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण ।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम ।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा ।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा ।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं ।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं ।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पंचमी, मल्लिनाथ स्वामी ।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए ।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **आतम के हित में प्रभू, छोड़ दिए जगजाल ।**
मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल ।।

(शम्भू छन्द)

जय-जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय-जय शिव पदवी के धारी ।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी ।।
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए ।
नृप कुम्भराज माँ प्रजावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए ।।
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन ।

प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन ।।
नव माह गर्भ में रहे प्रभू, शचियाँ कई सेवा को आई ।
हर्षित होकर प्रभु भक्ती में, कई दिव्य सामग्री भी लाई ।।
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया ।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया ।।
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया ।
शचि ने बालक को लेकर के, मायामयी बालक पधराया ।।
फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया ।
अभिषेक कराया भाव सहित, तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया ।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए ।
विद्युत की चंचलता लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए ।।
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को, पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो ।
प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो ।।
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया ।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम, निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया ।।
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हे ।
तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हे।।
शुभ फाल्गुन शुक्ल पंचमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए ।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए ।।
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है ।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है ।।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाता है ।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है ।।
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं ।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं ।।
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर! तव चरण शरण में आए हैं ।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी, संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा ।
त्रिभुवन के स्वामी, 'विशद' नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीष ।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं ज्ञान ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

प्रथम वलयः

दोहा– पंच महाव्रत धारते, तीर्थंकर भगवान ।
पुष्पांजलि करते विशद, करने निज का ध्यान ॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पाँच महा व्रतधारी श्री मल्लि जिन

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ अहिंसा व्रत को धारण, करके बनते जिन अरहंत ।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्राप्त करें गुण स्वयं अनन्त ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥1॥

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सत्य महाव्रत धारण करके, परम सत्य के धारी हो ।
शिव पथ के अनुगामी अनुपम, पूर्ण रूप अविकारी हो ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥2॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्रत अचौर्य को पाने वाले, बन जाते अर्हत् भगवान ।
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, भव्य जीव करते गुणगान ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥3॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके, परम ब्रह्म में वास करें ।
कर्म घातिया नाश करें फिर, केवल ज्ञान प्रकाश करें ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥4॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संत अपरिग्रह के धारी हो, बन जाते हैं जो निर्ग्रन्थ ।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, बनते तीर्थंकर अर्हंत ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥5॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंच महाव्रत का फल अनुपम, पाते हैं इस जग के जीव ।
संयम तप के द्वारा अर्जन, करते हैं जो पुण्य अतीव ॥
गणधर मुनि इन्द्रों से पूजित, श्री जिनवर के चरण कमल ।
विशद भाव से अष्ट द्रव्य ले, करते हैं सविनय अर्चन ॥6॥

ॐ ह्रीं पंच महाव्रत धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– मल्लिनाथ जिनराज पद, पूज रहे दिग्पाल।
पुष्पांजलि करते विशद, हम भी यहाँ त्रिकाल॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश ।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश ॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान ।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान ॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ ।
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

दश दिग्पाल द्वारा पूज्य मल्लिजिन

(शम्भू छन्द)

गजारूढ़ हो पूर्व दिशा से, शची इन्द्र कई साथ प्रधान।
अक्षत शस्त्र कोटि ले हाथों, शोभित होता सूर्य महान्॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, दिक्सुरेन्द्र का है आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्य इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ दैदीप्यमान ज्वालायुत, आग्नेय से अग्निदेव।
तीव्र फुलिंगें उठती जिसमें, शक्ति हस्त से युक्त सदैव॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, अग्नि इन्द्र का है आह्वान।
आग्नेय के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान॥2॥

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुभट प्रचण्ड दण्ड बाहुयुत, चण्डान्वित है तेज प्रचण्ड ।
छाया कटाक्षद्युति भासमान शुभ, लोलाय बाहयत श्रेष्ठ अखण्ड ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सुर चमरेन्द्र का है आह्वान ।
दक्षिण दिश के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥3॥

ॐ ह्रीं चमरेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रतिहारी नैऋत्य दिशा का, रत्न कांति सम आभावान ।
ऋक्षारूढ़ अस्त्र मुद्गर ले, अतिशय उज्ज्वल कांतिमान ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, नैऋत्य देव का है आह्वान ।
नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥4॥

ॐ ह्रीं नैऋत्य इन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मकरारूढ़ अस्त्र परिवेष्टित, नागपाश ले अपने साथ ।
मुक्तामय कल्पित है अनुपम, सुन्दर द्रव्य लिए है हाथ ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, वरुण देव का है आह्वान ।
पश्चिम दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥5॥

ॐ ह्रीं वरुणेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महामहिज आयुध ले हाथों, अश्वारूढ़ शक्तिधारी ।
वायुवेग विलास भूषान्वित, वायव्यकोण का अधिकारी ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, पवनइन्द्र का है आह्वान ।
वायव्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥6॥

ॐ ह्रीं पवनेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नोज्ज्वल पुष्पों से शोभित, देवि धनादिक को ले साथ ।
उत्तर से विमान पर चढ़कर, धनद कई इन्द्रों का नाथ ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, है कुबेर का शुभ आह्वान ।
उत्तर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥7॥

ॐ ह्रीं कुबेरेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जटा मुकुट वृषभादिरूढ़ हो, गिरिवर पुत्री को ले साथ ।
धवलोज्ज्वल अंगों का धारी, शुभ त्रिशूल ले अपने हाथ ॥

श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, ईशान देव का शुभ आह्वान ।
ईशान दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥8॥

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वायु वेग वेगार्जित निज के, धरणेन्द्र पद्मावति का ईश ।
उच्च कठोर कुर्म आरोही, अधोलोक का है आधीश ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, धरणेन्द्र का भी है आह्वान ।
अधर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥9॥

ॐ ह्रीं धरणेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चटाटोप चल शौर्य उदारी, मूर्ति विदारित है विकराल ।
सिंहारूढ़ मदभ्र कांतियुत, रोहणीश करता नत भाल ॥
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सोम इन्द्र का है आह्वान ।
ऊर्ध्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान ॥10॥

ॐ ह्रीं सोमेन्द्र दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– मल्लिनाथ जिनराज पद, झुकते हैं दिग्पाल ।
चरण वन्दना जो करें, नत हो चरण त्रिकाल ॥

ॐ ह्रीं दश दिग्पाल द्वारा पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– गुण पाये सम्यक्त्व के, द्वादश तप को धार ।
मल्लिनाथ जिनराज जी, हुऐ विभव से पार ॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश ।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश ॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान ।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान ॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ !
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सम्यकदर्शन के गुण एवं द्वादश तप

(नरेन्द्र छन्द)

आठ अंग सम्यक् दर्शन के, आठ अन्य गुण गाए ।
है संवेग प्रथम गुण अनुपम, धर्मानुराग कहाए ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥1॥

ॐ ह्रीं संवेग गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुण निर्वेग प्राप्त जो करते, भोग उन्हें ना भाते ।
इस संसार शरीर भोग से, पूर्ण विरक्ती पाते ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥2॥

ॐ ह्रीं निर्वेग गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज पापों की निन्दा करके, मन में खेद मनाते ।
प्रायश्चित्त करते भावों से, यत्नाचार जगाते॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥3॥

ॐ ह्रीं आत्मनिंदा गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राग द्वेष आदी भावों से, पाप हुए जो भाई ।
गुरु सम्मुख आलोचन करना, यह गर्हा कहलाई ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥4॥

ॐ ह्रीं गर्हा गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्रोध लोभ रागादिक जिनके, मन में ना रह पावें ।
उपशम गुण से जीव युक्त वह, सारे पाप भगावें ॥

सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥5॥

ॐ ह्रीं उपशम गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु नव देवों में, विनय भाव आचरते ।
भक्ती गुण के धारी प्राणी, कर्म कालिमा हरते ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥6॥

ॐ ह्रीं भक्ति गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

साधर्मी से प्रीति बढ़ाना, वात्सल्य कहलाए ।
धर्मायतन की रक्षा करने, में उसका मन जाए ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥7॥

ॐ ह्रीं वात्सल्य गुण धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भव सिन्धु में डूबे प्राणी, के प्रति करुणा आए ।
अनुकम्पा गुण सम्यक् दृष्टी, का पावन कहलाए ॥
सम्यक् दर्शन का गुण पावन, निर्मलता प्रगटाए ।
दर्श विशुद्धी पाने को हम, जिन चरणों में आए ॥8॥

ॐ ह्रीं अनुकम्पा गुणधारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

जो विषयाहार को त्यागें, वे अनशन तप में लागें ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥9॥

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप ऊनोदर जो पावें, वह अपने कर्म नशावें ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥10॥

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्रत परिसंख्यान तपधारी, नित करें निर्जरा भारी ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥11॥

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो भिन्न भिन्न रस त्यागी, निज आतम के अनुरागी ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥12॥

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन विविक्त शैय्यासन पावें, निज गुण में रमते जावें ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥13॥

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप काय क्लेश जगाते, मन में जो खेद ना लाते ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥14॥

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त जो धारें, वे अपने दोष निवारें ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥15॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्त तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो विनय गुणों को पाते, वे ज्ञानी जीव कहाते ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥16॥

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तप धारी, पावन होते अनगारी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥17॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत स्वाध्याय में रहते, उनको शिवगामी कहते ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥18॥

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, संवर कर कर्म नशावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥19॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो आतम ध्यान लगाए, वह ध्यान सुतप को पाए ।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी ॥20॥

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– पावें गुण सम्यक्त्व के, तप धारें जिनराज।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पाते शिवपद राज॥

ॐ ह्रीं अष्ट गुण द्वादश तप धारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– इन्द्र पूजते जिन चरण, लौकान्तिक के देव ।
मल्लिनाथ के पद युगल, पूजें सभी सदैव ॥

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश ।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश ॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान ।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान ॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ !
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

बत्तीस देवों एवं अष्ट लौकान्तिक द्वारा पूज्य मल्लिजिन

(भुजंग प्रयात)

असुर इन्द्र पंक भाग भवनों से आवें, पूजा को द्रव्य के थाल भर लावें ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥1॥

ॐ ह्रीं असुरेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाग इन्द्र खर भाग भवनों से आते, भक्ति में अपने जो मन को लगाते ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥2॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विद्युतेन्द्र भवनवासी, महिमा दिखाते, अर्चा में अपने जो मन को लगाते ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥3॥

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र पूजा कर मन में हर्षावें, जयकारा बोल के महिमा जो गावें ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥4॥

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अग्नीन्द्र खर भाग भवनों के वासी, करते हैं अर्चना जिनवर की खासी ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥5॥

ॐ ह्रीं अग्नीन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मारुतेन्द्र भवनों से फल लेके आवें, भक्ति में लीन हो जिन के गुण गावें ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥6॥

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्तनित इन्द्र की है महिमा न्यारी, चरणों का बनता जो प्रभु के पुजारी ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनित इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उदधि इन्द्र की भक्ति जग से निराली, भव्य प्राणियों का जो मन हरने वाली ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥8॥

ॐ ह्रीं उदधि इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दीपेन्द्र भक्ती से दीपक जलावें, नाचें औ गावें जो मन में हर्षावें ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥9॥

ॐ ह्रीं दीपेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी कहावें, पूजा को परिवार साथ में जो लावें ।
जिनवर की पूजा जो अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें ॥10॥

ॐ ह्रीं दिक् कुमारेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर का जानिए, श्री जिनवर का भक्त जिसे पहचानिए ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नर इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र किम्पुरुष द्वितिय व्यन्तर का कहा, भव्य भ्रमर जिनचरण कमल का जो रहा ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥12॥
ॐ ह्रीं किम्पुरुष इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
इन्द्र महोरग व्यन्तर का जानो सही, जिन चरणों में उसकी भी भक्ती रही ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥13॥
ॐ ह्रीं महोरग इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
इन्द्र रहा गन्धर्व व्यन्तरों का अहा, हो जिनेन्द्र की पूजा वह पहुँचे वहाँ ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥14॥
ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
यक्ष इन्द्र की महिमा का ना पार है, जिसकी भक्ति रहती अपरम्पार है ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥15॥
ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
राक्षस इन्द्र भी आते भावों से भरे, भक्ति करके औरों के मन को हरे ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥16॥
ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
भूत इन्द्र भी अपनी वृत्ती छोड़ते, जिन अर्चा से अपना नाता जोड़ते ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥17॥
ॐ ह्रीं भूतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
पिशाच इन्द्र आते हैं भावों से अरे!, नव कोटी से भक्ति भावों से भरे ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥18॥
ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
चन्द्र इन्द्र ज्योतिष का भाई जानिए, जिन चरणों का भक्त भ्रमर पहिचानिए ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥19॥
ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ज्योतिषवासी है प्रतीन्द्र सूरज महा, जिनचरणों का भक्त श्रेष्ठतम जो रहा ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से ॥20॥
ॐ ह्रीं प्रतीन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(शेर छन्द)

सौधर्म इन्द्र श्रीफल ले स्वर्ग से आवे ।
पूजा कर प्रसन्न हो मन हर्ष बढ़ावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥21॥
ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
ईशान इन्द्र पूँगी फल साथ में लावे ।
होके सवार गज पे भक्ति से जो आवे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥22॥
ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
सानत कुमार इन्द्र गजारूढ़ हो आवे ।
आमों के गुच्छे साथ में परिवार जो लावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥23॥
ॐ ह्रीं सानत कुमार इन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
माहेन्द्र इन्द्र केले के गुच्छे ले आवे ।
होके सवार अश्व पे परिवार को लावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥24॥
ॐ ह्रीं माहेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
होके सवार ब्रह्म इन्द्र हंस पे आवे ।
जो पुष्प केतकी से प्रभु पूज रचावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥25॥
ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ लान्तवेन्द्र दिव्य फल ले भाव से आवे ।
परिवार साथ में लाके हर्ष मनावें ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होके सवार चकवा पे शुक्रेन्द्र भी आवे ।
शुभ पुष्प ले सेवन्ती के पूज रचावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कोयल पे हो सवार शतारेन्द्र जो आवे ।
जो नील कमल से पूजे अर्घ्यं चढ़ावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥28॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के गरुढ़ पे आनतेन्द्र वेग से आवे ।
परिवार सहित श्री जिन की पूज रचावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥29॥

ॐ ह्रीं आन्तेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के विमान पद्म पे प्राणतेन्द्र भी आवे ।
परिवार सहित तुम्बरु, ले पूजा रचावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चढ़के कुमुद विमान पे, आरणेन्द्र जो आवे ।
परिवार सहित गन्ने ले आन चढ़ावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥31॥

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अच्युतेन्द्र हो सवार जो मयूर पे आवे ।
परिवार सहित भक्ति से, जो चॅवर ढुरावे ॥
श्री मल्लिनाथ जिन की पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम साथ लाए हैं ॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लौकान्तिक देव पूजित जिन

(आल्हा छन्द)

लौकान्तिक सारस्वत आते, ब्रह्मलोक की दिश ईशान ।
तप कल्याणक में सम्बोधन, करते हैं जिनवर को आन ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥33॥

ॐ ह्रीं सारस्वत देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है आदित्य इन्द्र भी, पूर्व दिशा से यहाँ प्रधान ।
श्री जिनेन्द्र के चरणों में जो, रखता है अनुपम श्रद्धान ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥34॥

ॐ ह्रीं आदित्य देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आग्नेय से अग्नि इन्द्र शुभ, भक्ति करता मंगलकार ।
स्वयं भक्ति से शीश झुकाकर, वन्दन करता बारम्बार ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहा प्रधान ॥35॥

ॐ ह्रीं अग्नि देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अरुण इन्द्र दक्षिण से आकर, करता है प्रभु का सम्मान ।
प्रभु के चरणों अर्चा करके, करता है शुभ मंगलगान ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥36॥

ॐ ह्रीं अरुण देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है वायव्य दिशा से, गर्दतोय लौकान्तिक देव ।
जिन चरणों की भक्ती करने, में रत रहता विशद सदैव ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥37॥

ॐ ह्रीं गर्दतोय देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तुषित इन्द्र पश्चिम से आकर, जिन चरणों में करे प्रणाम ।
भक्ति वन्दना करके फिर वह, जाता है स्वर्गों के धाम ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥38॥

ॐ ह्रीं तुषित देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आता है नैऋत्य कोण से, लौकान्तिक सुर अव्यावाध ।
जिन चरणों की भक्ति करके, पाता प्रभु का आशीर्वाद ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥39॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्र अरिष्ट उत्तर से आकर, भक्ति करता है कर जोर ।
भक्ती के फल से इस जग में, मंगल होता चारों ओर ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥40॥

ॐ ह्रीं अरिष्ट देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भवन वानव्यन्तर ज्योतिष अरु, स्वर्गो के सब इन्द्र महान ।
लौकान्तिक वासी सुरेन्द्र सब, करते हैं प्रभु का गुणगान ॥
ब्रह्म ऋषी कहलाने वाले, श्री जिन का करते गुणगान ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य प्रभु पद, चढ़ा रहे हैं यहाँ प्रधान ॥41॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत चतुर्निकाय देव एवं अष्ट लौकान्तिक देव पूजित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम वलय:

दोहा– **होती पूरी आश है, मल्लिनाथ के पास ।**
मंगलमय जीवन बने, होवे मुक्ति वास ॥

(पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश ।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश ॥
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान ।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, में करते आह्वान ॥
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ !
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

46 मूलगुण के अर्घ्य (10 जन्म के अतिशय)

(सखी छन्द)

प्रभु अतिशय रूप सुपावें, लख कामदेव शर्मावें ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में सुगंध प्रभु पाए, नर नारी सुर हर्षाए ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥2॥

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में न स्वेद रहा है, यह अतिशय एक कहा है ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥3॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन में मलमूत्र न होई, न रहे अशुद्धी कोई ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥4॥

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन उच्चारें, जीवों में करुणा धारें ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥5॥

ॐ ह्रीं हित मित प्रिय सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु बल अतुल्य के धारी, है शक्ति जग से न्यारी ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥6॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है श्वेत रुधिर प्रभु तन में, वात्सल्य रहे जन-जन में ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥7॥

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वसु लक्षण एक सहस तन, दर्शन कर हर्षित हो मन ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट लक्षण सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुष्क पाए संस्थाना, तन हीनाधिक नहिं माना ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥9॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ वज्रवृषभ कहलाए, प्रभु उत्तम संहनन पाए ।
हे जिनवर! जग उपकारी, जन-जन के करुणाकारी ॥10॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय

शत् योजन सुभिक्षता होई, दुर्भिक्ष रहे न कोई ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥11॥

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशयधारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो गमन गगन में करते, औरों के संकट हरते ।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी ।
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥12॥

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो समवशरण में आवें, चारों दिश दर्श दिखावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥13॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु दयावान हितकारी, इस जग में मंगलकारी।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥14॥

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर नर पशु जड़कृत कोई, जिन पर उपसर्ग न होई ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥15॥

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन है औदारिक प्यारा, प्रभु करें न कवलाहारा ।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥16॥

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर, त्रलोक्यपति जगदीश्वर ।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, सौ इन्द्र चरण में आते ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥17॥

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

न बढ़ें केश नख कोई, ज्यों के त्यों रहते सोई ।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥18॥

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु के लोचन मनहारी, है नाशा दृष्टी प्यारी ।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी ॥
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥19॥

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन परमौदारिक पाए, पर छाया नहीं दिखाए।
हे विशद ज्ञान के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाए, दश अतिशय प्रभु ने पाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥20॥

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय सहजातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

है अर्ध मागधी भाषा, सुरकृत है शुभ परिभाषा ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥21॥

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीवों में मैत्री जागे, जिनभक्ति में मन लागे ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥22॥

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट्ऋतु के फल फलते हैं, अरु फूल स्वयं खिलते हैं ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥23॥

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरुपरिणाम देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्पण सम भूमि चमकती, सूरज सी कांति दमकती ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥24॥

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुरभित शुभ वायु चलती, जन-जन की वृत्ति बदलती ।
जो हैं भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥25॥

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब जग में आनंद छावे, हर प्राणी बहु सुख पावे ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों वृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कंटक से रहित जमीं हो, दोषों की वहाँ कमी हो ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥27॥

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नभ में गूंजे जयकारा, जीवों में सौख्य अपारा।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी॥

प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥28॥

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टि, सौभाग्य मई सब सृष्टि ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥21॥

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर पग तल कमल रचाते, प्रभु के गुण मंगल गाते ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥30॥

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, यह प्रभु की है प्रभुताई ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥31॥

ॐ ह्रीं शरद कमल वन्निर्मल गगन गमनत्व देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्मल हों सभी दिशाएँ, जिनवर जहँ शोभा पाएँ ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥32॥

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर धर्मचक्र ले आवे, आगे जो चलता जावे ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों वृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥33॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वसु मंगल द्रव्य सुहावन, लाते हैं सुर अति पावन ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी ॥
प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों वृत कहलाए ।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी ॥34॥

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

8 प्रातिहार्य (चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई ।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुखदाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥35॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुरवासी, पुष्प लिए भाई ।
पुष्पवृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥36॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्प वृष्टि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगलदाई ।
दिव्य ध्वनि सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई ॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥37॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुंदर सुखदाई ।
चौंसठ चँवर ढुरें प्रभु आगे, अति शोभा पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥38॥

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परमवीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत पूज्य भाई ।
रत्न जड़ित अति शोभा मण्डित, सिंहासन पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥39॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महत् ज्योति जिनवर के तन की, अतिशय चमकाई ।
प्रभा पुंज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥40॥

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यातिशय सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हर्षभाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई ।
देव दुंदुभि प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥41॥

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़े कनक नग छत्र मणीमय, रत्नमाल लपटाई ।
तीन लोक के स्वामी हों ज्यों, छत्रत्रय पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥42॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहित द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

4 अनन्त चतुष्टय

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई ।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥43॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शनगुण प्राप्त द्वितिय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई ।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥44॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुण प्राप्त द्वितिय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई ।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई ॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥45॥

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुणप्राप्त द्वितिय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंतराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई ।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई ॥

जिनेश्वर पूजों हो भाई ।
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ जिन, पाए प्रभुताई ॥46॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण द्वितिय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– **मल्लिनाथ जिन प्रभू की, भक्ती फले अविराम ।**
द्वितिय बालयति पूज कर, पावें मुक्ती धाम ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय बालयति श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा– मोह मल्ल को जीतकर, जग में हुए महान् ।
मल्लिनाथ भगवान का, करते हम गुणगान ॥

(पद्धड़ी छन्द)

जय जय मल्लिनाथ जिन स्वामी, त्रिभुवन पति हे अन्तर्यामी ।
जय जय परम धर्म के धारी, जय जय वीतराग अविकारी ॥
जय जय अशरण शरण सहाई, विश्व विलोकन जन हितदायी ।
जय जय तीर्थंकर पदधारी, ईश्वर दर्शायक मनहारी ॥
जय जय केवल ज्ञान प्रकाशी, जय जय कर्म घातिया नाशी ।
जय सुर समवशरण बनवाए, जय शतेन्द्र पद, शीश झुकाए ॥
परमानन्द गुणी शुभकारी, विश्व विजेता मंगलकारी ।
जय जय त्रिभुवन के हितकारी, जय जय मल्लिनाथ भवहारी ॥
सप्त तत्त्व दर्शाने वाले, शिव पथ राही आप निराले ।
एक शुद्ध अनुभव जिन पाये, दो विधि राग द्वेष बतलाए ॥
श्रेणी नय दो धर्म बताए, दो प्रमाण आगम गुण गाए ।
तीन लोक तिय काल कहाए, शल्य पल्य त्रय वात गिनाए ॥
चार बंध संज्ञा गति ध्यानी, आराधन निक्षेप सुदानी ।
पंच प्रमाद लब्धि आचारे, बन्ध के हेतु पैंताले सारे ॥

पंच भाव छह द्रव्य निराले, छह-आवश्यक साधू पाले ।
छह विध हानि वृद्धि के ज्ञाता, सप्त भंग वाणी के दाता ॥
संयम समुद्घात भय जानो, तत्त्व व्यसन धातू पहिचानो ।
आठ सिद्ध के गुण मद गाए, प्रातिहार्य द्रव्य कर्म बताए ॥
नव लब्धि हरि प्रतिहर भाई, नव पदार्थ बलभद्र सुहाई ।
नवग्रह लब्धी क्षायिक नव निधियाँ, नो कषाए भक्ति की विधियाँ ॥
दशों बन्ध के मूल नशाएँ, विशद ज्ञान से प्रभु दर्शाएँ ।
शाश्वत् तीर्थराज से स्वामी, आप हुए मुक्ती के गामी ॥
बार-बार यह अर्ज हमारी, तीन लोक पति हे त्रिपुरारी ।
पर परिणति को पूर्ण नशाएँ, परमानन्द स्वरूप जगाएँ ॥
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते ।
शिव पदवी जब तक ना पाएँ, 'विशद' आपको हृदय बसाएँ ॥

(घत्ता छन्द)

जय जय जिन त्राता, भव सुख दाता, भाग्य विधाता सुखकारी ।
जय गुण गणधारी, शिव सुखकारी, जग हितकारी भवहारी ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चरणों में वन्दन करें, हे जिन भक्त त्रिकाल ।
कट जाए भव भ्रमण का, शीघ्र नाथ जंजाल ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री 1008 मल्लिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज–मैं तो आरती उतारूँ रे...)

हम तो आरती उतारे जी, मल्लिनाथ जिनवर की–हो ।
जय-जय श्री मल्लिनाथ, जय-जय हो–हम...॥ टेक
माँ प्रजावती के लाल, कुंभ नृप के प्यारे ।
प्रभु छोड़ के जगत् जंजाल, संयम को धारे ।
लिए मिथिला नगर अवतार, स्वर्ग से चय कीन्हे ।
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथों को जोड़-जोड़। हो..॥1॥
प्रभु वीतराग जिनराज, करुणा के धारी ।
हम करें आरती आज, प्रभु की मनहारी ।
मिले हमको सौख्य अपार, प्रभु की भक्ति से ।
आओ मंदिर में डोल-डोल, हृदय के पट खोल-खोल। हो...॥2॥
नई जीवन में आये बहार, जिन गुण गाने से ।
मिले मुक्ति की शुभ राह, दर्शन पाने से ।
'विशद' मिलता है आनन्द अपार, चरणों आने से ।
आओ दर्शन को देख-देख, माथा को टेक-टेक। हो..।3॥

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा– **परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।**
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ॥

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए॥1॥
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी॥2॥
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए॥3॥
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावती के गर्भ में आए॥4॥

इक्ष्वाकू नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।।5।।
अश्विनी श्रेष्ठ नक्षत्र बताए, प्रातःकाल का समय कहाए।।6।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।।7।।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।8।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।।9।।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।10।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।।11।।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।12।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।।13।।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।14।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।।15।।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।16।।
पौर्वाह्न काल का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभू ने पाया।।17।।
शाली वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी।।18।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।19।।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया।।20।।
पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।।21।।
गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख जी पहले गाए।।22।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।।23।।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए।।24।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।।25।।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए।।26।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।।27।।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनी सब गाए।।28।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।।20।।

फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो।।30।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ती पद शुभ पाया।।31।।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूली बेला मनहारी।।32।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।।33।।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी।।34।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।।35।।
यशःकीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांती उपजावें।।36।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।।37।।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होवें आज्ञाकारी।।38।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।।39।।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे प्रथम भादौ मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन मंगलवासरे श्री मल्लिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।